पैंतीस अखरी

श्री गुरु नानक देव जी कृत

परमहंस गुरु बाबा राम मंगल दास जी के आशीर्वाद
से प्राप्त संकलित अंश

प्रकाशक :- परम हंस प्रकाशन, गोकुल भवन अयोध्या ।

* पैंतीस अखरी *

* श्री गुरु नानक देव जी कृत *

अ ई स ह

ओंकार सरब परकाशी। आतम शुद्ध करै अविनाशी ।१।
ईश जीव में भेद न जानो। साधु चोर सब ब्रह्म पहिचानों ।२।
हस्ती चींटीं तृण ले आदम्। एक अखंडित बसै अनादं ।३।

क ख ग घ ङ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कारन करन अकर्ता कहिये । भानु प्रकाश दिवश जो लहिये ।१।

खान
नाख पान कछु रूप न रेखं । निर्विकार अद्वैत अलेखं ।२।

गात ग्राम सब देश दिशंतर । सत्त कर्तार सर्व के अन्तर ।३।

घन का नाई सदा अखंडित । ज्ञान बोध पर आतम पंडित ।४।

च छ ज झ ञ

चाप ज्ञान कर जाहि विराजै । छाया द्वैत सकल उठि भाजै ।१।

जागत स्वप्न सुषुपति तुरिया । आतम भूपति की यह पुरिया ।२।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

झुनत कार अनहद घन घोरं । त्रिकुटी भीतर अति छवि जोरं ।३।
जानत योगी या रस बाता । सोऽहं शब्द अमीरस माता ।४।

ट ठ ड ढ ण

टारन भरन अघन की सैना । सतगुरु मुक्ति पदारथ दैना ।१।
ठाकत दुबिधा निर्मल करनं । डारि सुधा मुख आपदा हरनं ।२।
ढापत द्वैत अंधेरे मन की । नासत गुरू भ्रमत सब तन की ।३।

त थ द ध न

तारन गुरू बिना नहिं कोई । श्रुति स्मृति मधि बात परोई ।१।
थान अद्वैत तभी जो परसै । मन बच करम गुरू पग दरसै ।२।
दारिद रोग मिटै सब तन का । गुरु करुनाकर होवै मुक्ता ।३।
धनि गुरुदेव मुक्ति के दाते । नाना नीति वेद जस गाते ।४।

प फ ब भ म

पारब्रह्म सब माहिं समाना । शास्त्र सिद्धांत कियो बखियाना ।१।
फाँस कटी द्वैत गुरु पूरे । बाजै शब्द अनाहद तूरे ।२।
बाणी ब्रह्म साधु भयो मेला । संग द्वैत नहिं सदा अकेला ।३।
मान अपमान दोऊ जरि गयऊ । जोऊ थे सोऊ पुनि भयऊ ।४।

य र ल व श

या किरिया को सो पहिचाने । अद्वैत अखंड आपको मानै ।१।
रमि रहे सब में पुरुष अलेखं । आदि अपार अनादि अभेषं ।२।
रारि मिटी आतम दरसाना । प्रगटे ज्ञान जोति तब जाना ।३।
लवलीन भये आतम मधि ऐसे । ज्यों जल जलहिं भेद कहो कैसे ।४।
वासदेव बिन और न कोऊ । नानक ओं सोऽहँ आतम दोऊ ।५।

महल दसवें नाल दुर्गा मंत्र समेत लिख्या ।

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं सुन्दरी बालायै नमः ॥

॥ इति पैंतीस अखरी सम्पूर्णम् ॥

* श्री गुरु नानक देव जी महाराज की वाणी *

दोहा—अर्द्ध चन्द्र ओंकार पर,
जानि लेय जो कोय ।
सत्य लोक को जाय फिर,
आवागमन न होय ॥१॥
कण्ठ कि जाप पिपीलिका,
स्वाँसा की है मीन ।

सूरति जाप विहंग है,
जानहिं परम प्रवीन ॥२॥

पदः—शब्द का भेद कछु वेद नही पायौ,
कहत हैं सब साँच साँच ।
गुरुदेव से नाम कि धुनी जान,
तब हरि चरित्र फिर बाँच बाँच ॥१॥
तीनोइ गुनन के परे होय,
तब लगै कभी नहिं आँच आँच ।

मन रम्यो नाम औ रूप संग,

ठग स्थिर ह्वै गये पाँच पाँच ॥२॥

प्रेम मगन छवि देखै तौन,

घनश्याम सखा सखी नाच नाच ।

मिटि जाय करम गति विधि की लिखी,

जो मस्तक में दियो खाँच खाँच ॥३॥

है सुरन को दुर्लभ नर शरीर,

कैसा सुन्दर यह ढाँच ढाँच ।

नानक बिरथा मानुष शरीर,
हरि भजन बिना जैसे काँच काँच ॥४॥

दोहा—वेद कि गति बैकुण्ठ तक,
आगे गति कछु नाहिं ।
राम नाम गुरु से मिलै,
है सब के तन माहिं ॥१॥
सुर मुनि संतन जो कही,
सो सब दीन लिखाय ।

वेद भेद पायो नहीं,
साँची दीन बताय ॥२॥
वेद त्रिगुन के परे नहिं,
तीनों गुन परवीन ।
श्री कृष्ण भगवान ने,
गीता में कहि दीन ॥३॥
मोक्ष जीव तब होत है,
मिटै सबै संताप

एक अंश हरि भेजते,
जग हितार्थ हित आप ॥४॥
पाप ते महि गरुआय जब,
तब आवैं वे अंश ।
जगत आय रक्षा करैं,
होय दुःख विध्वंस ॥५॥
फंसै नहीं वे जगत में,
चले जांय हरि पास ।

ऐसै खेल लगा रहै,
कीजे मन विश्वास ॥६॥
हरि की लीला अगम है,
नाहिंन पारा - वार ।
सतगुरु जौ किरपा करैं,
नाम खुलै सुख - सार ॥६॥
चारों मोचन का यहीं,
हाति जानि तुम लेहु ।

राम नाम सुमिरन करहु,
निज नैनन लखि लेहु ॥८॥
भक्तन संग खेलत रहैं,
राम आप ही खेल।
संशय देयं मिटाय सब,
जो ह्वै जाय अकेल ॥९॥
अकेल उसी को कहत हैं,
नाम कि धुनि एक तार।

तार कभी टूटै नहीं,
काह करै संसार ॥१०॥
कोटिन के तब बीच में,
बैठौ बोलौ खाव ।
~~कोई~~ विघ्न कोई व्यापै नहीं,
राम नाम परभाव ॥११॥
यह सिद्धान्त अपेल है,
जानि लेहु गुरु पास ।

आँखी कान खुलैं तवैं,
होहु राम के दास ॥१२॥
राजयोग याको कहत,
सब योगन को मूल ।
या के बिन जाने, सुनो,
मिटै न तन मन शूल ॥१३॥
छूटि जाँय संकल्प सब,
निर्विकल्प होय जाय ।

तब हरि के ढ़िग जाइ है,
साँची दीन बताय ॥१५॥
संतन की संगति करै,
तन मन प्रेम लगाय ।
राम कृपा निधि द्रवहिं तब,
सतगुरु देहिं मिलाय ॥१६॥
सूरति शब्द के जाप को,
सतगुरु देहिं बताय ।
रोम रोम से नाम धुनि, श्याम स्वरुप दिखाय ॥

अजपा जाप को कहत हैं सुरत शब्द का जाप ॥

जिह्वा चलै न कर हिलै,
जपै आप को आप ॥१७॥
राम विष्णु औ कृष्ण जी,
एकै हैं नहिं दोय ।
नानक जे जन जानिगे,
मुक्ति भक्ति लियो सोय ॥१८॥
कह नानक धनि संत वे,
जिन कछु साधन कीन ।

तिन चरनन की रज भली,
मुख औ शिर पर लीन ॥१६॥
साढ़े तीन कोटि तीरथ बसैं,
चरनन में लेव जान ।
धोय के प्रेम से पीजिये,
कह नानक हो ज्ञान ॥२०॥
संतन की महिमा अगम,
को करि सकै बखान ।

नानक हरदम संग रहैं,
जिनके कृपा निधान ॥२१॥

❀ चौपाई ❀

संतन के मन की हरि जानैं ।
हरि की लीला संत बखानै ॥१॥
संत सदा संग केलि करत हैं ।
हरि संतन का ध्यान धरत हैं ॥२॥
हरि औ संत संग रहैं कैसे ।

जल औ जल तरंग हैं जैसे ॥३॥

दोहाः—हरि औ संत में भेद नहिं, नहिं

कह नानक सुनि लेव ।

तन मन मारो दीन ह्वै,

जानि गूढ़ गति लेव ॥१॥

सात कमल तन में अहैं,

नाल एक ही जान ।

नानक कहि अभ्यास करि,

देखैं चतुर सुजान ॥२॥

चौपाई:— कमल लाल रंग दल है चारी ।
बैठि गजानन सूरति सम्हारी ॥१॥
गुदा चक्र का भेद बताया ।
करि कै जतन जानि हम पाया ॥२॥
कमल पीत रंग षट् दल जानो ।
शक्ति सहित ब्रह्मा कर थानो ॥३॥
इन्द्री चक्र का भेद बतायन ।

उत्पति यहं ते होत सुनायन ॥४॥

नाभी इन्द्री मध्य बखानो,

कुण्डलिनी को यहं पै जानो. ॥५॥

पूंछ को मुहं में बैठि दबाये ।

जब जागे तब सुख उपजाये ॥६॥

श्याम रंग दल आठ सुहावन ।

विष्णु लक्ष्मी बास है पावन ॥७॥

पालन करत सबन पर दाया ।

नाभि चक्र का हाल सुनाया ॥८॥

बारह दल रंग श्वेत कमल हैं ।

शिव गिरिजा जहं बैठि विमल हैं ॥९॥

हृ हृदय चक्र का हाल यह भाई ।

जो देखा सो दीन बताई ॥१०॥

कमल धूम रंग सोरह दल जंह ।

आतम इच्छा शक्ति रहत तंह ॥११॥

कण्ठ के चक्र का भेद है प्यारे ।

चलु आगे मिलिहैं सुखसारे ॥१२॥

कमल सहस दल बहु परकाशा ।

छेद:—जोति निरंजन गिरिजा वासा ॥१३॥

दो० शेष सुकुल रंग सहस फन,

ऊपर छाया कीन ।

त्रिकुटी के नीचे अहै,

जानहिं परम प्रवीन ॥१॥

चौपाई:—दुइ दल कमल रंग शशि केरा ।

रेफ विन्दु को ता पर डेरा ॥१॥

दोहा:— शिव ब्रह्मा विष्णु जपैं.

राम नाम यह जान ।

चमकै तेज अपार तंह,

को करि सकै बखान ॥१॥

चौपाई:— त्रिकुटी चक्र कहत हैं या को ।

तिरगुन का फाटक है बाँको ॥१॥

सूरति शब्द में जौन लगावै ।

सतगुरु किरपा ते खुलि जावै ॥२॥

तीनों देव खुशी हों ताता ।

आशिष देयं जाव अब आता ॥३॥

दोहा:-- तिरबेनी स्नान करि,

जब निर्मल ह्वै जाय ।

तब जोति के दरश हों,

गगन महल में जाय ॥१॥

पद:- गगन महल में रहस करत हैं

राधे कृष्ण मुरारी जी ॥१॥

राग रागिनी सखा सखी संग,

मुरली बाजै प्यारी जी ॥२॥

अनहद बाजा बरनि सकै को,

ताल सुरन गति न्यारी जी ॥३॥

नानक देखत ही बनि आवै,

कीजै ध्यान सम्हारी जी ॥४॥

दोहाः-- शून्य भवन में लय भई,

सुधि बुधि गई हेराय ।
किरपा निधि की कृपा ते,
फिर आगे बढ़ि जाय ॥१॥
भंवर गुफा या को कहत,
महा शून्य है नाम ।
जड़ समाधि तंह होत है,
हठ योगिन को धाम ॥२॥

बना अहै गोलोक ।

कृष्ण के अन्तर राधिका,

गोवन का तंह थोक ।३।

चौपाई:- बनै विचित्र भवन तंह पावन ।

रंग-रंग के वृक्ष सुहावन ।१।

पुष्पन की सुगंध तँह उड़ती ।

मधुर-मधुर वायू तंह चलती ।।२।।

झूला - झूलि रहैं गिरधारी ।

कोटि काम छबि तन पर वारी ।३।
राम ब्रह्म साकेत के बासी ।
जिन इच्छा करि सब परकाशी ।४।
पूरण सुख के हैं प्रभु रासी ।
चारौ मोक्षन के तंह बासी ।५।
बरनि सकै छबि वंह की को है ।
देखत ही बनि आवत जो है ॥६॥

अगानित शक्ती जिन उपजानी ।७।

दोहा:- हमको गुरु महाराज ने,
दीन्हों भेद बताय ।
जड़ समाधि में मन चपल.
सृष्टी रचत अघाय ।१।
या से या को मत सिखो,
मानो बचन हमार
राजयोग को जान लो,

मिलै तुम्हें सुखसार ।२।

शून्य में सोऽहं रुप प्रभु,

रहत लीजिये मान ।

पवन में पवन जवै मिलै,

कैसे पावै जान ।३।

सत्य लोक से दया निधि,

नाम को दीन पठाय ।

दुई दल कमल पै आय ॥४॥
एक अंश महाशून्य, में
दूसर शून्य में जान ।
गगन में तीसर जानिये,
त्रिकुटी चौथा मान ॥५॥
त्रिकुटी से बहु अंश बनि,
छिटकै तन में जाय ।
धुनी उठत है नाम की,

रोम रोम हर्षाय ॥६॥

चौपाई:—

मध्य भाग पश्चिम दिशि सोहै ।
तीनो नारायन मन मोहै ॥१॥

धुनी ध्यान का खेल पसारैं ।
शून्य समाधि सबै मिलि धारैं ॥१॥

आपै आप को जानन हारे ।
आपै आप खेल विस्तारे ॥३॥

करि विश्वास श्री गुरु बानी ।
निर्भय ह्वै भजु सारंग पानी ॥४॥
छूटि जाय सब तन की काई ।
हरशै में फिरि वही दिखाई ॥५॥
जप अरु ध्यान सदा संग जानो ।
अन्तराय होवैं नहिं मानो ।६।
अकह अपार अगम यह बाता ।
गुरु किरपा नानक कहैं ताता ॥७॥

दोहाः— सतगुरु बचन में प्रीति हो.
अन्धकार हरि जाय ।
प्रेम दीनता उर बसै,
हर दम रूप दिखाय ॥१॥

चौपाईः— नाम रूप का खेल अपारा ।
पालन उत्पति प्रलय क सारा ।१।
नाम से रूप बनत पल माहीं ।
रूप से नाम कि सब पर छाहीं ॥२॥

लीला धाम बनत नहिं देरी ।
नाम कि सब दिशि अहै रजेरी ।३।

पदः– नाम रूप परकाश दशा लय,
और न दूजा कोई जी ।१।
द्वैत भाव तन से जब छूटै,
सूरति शब्द मिलोई जी ।।२।।
अस्तुति निंदा सम तब होवै,
तन मन प्रेम ~~मिलोई~~ जी ।३।
भिजोई

नानक सतगुरु से जब जानै,
मुक्ति भक्ति तब होई जी ।४।

दोहाः— बायें स्वर में शशि रहैं
दाहिने सूर्य को जान ।
मध्य में सुखमन जानिये,
तहं पर शिव को थान ।१।

चौपाईः— प्राण का बास कंठ में जानो ।
हिरदय बास मनहि कर मानो ।१।

जब मन सूरति संग लग जाई ।
तब आकाश व्रत होत है भाई ।२।
छवि देखै जब श्याम की प्यारी ।
प्रेम की डोरि बंध्यौ सुख भारी ।३।

दोहा:- शंख, चक्र, गदा, पदुम कर,
मुरली धनुष औ बान ।
तीनौ शक्तिन के सहित,
सन्मुख कृपा—निधान ।१।

पन्द्रह बिधि की जाप को,
गुरु किरपा हम जान।
कह नानक मानो सही,
लय समाधि अरु ध्यान ।२।
नीचे ऊपर दंत जो,
समुहे पर हैं जान।
जिह्वा तिनमें साटिये,
मुख मूँदौ हो ज्ञान ।३।

बैठि उनमुनी से तबै,
सूरति शब्द लगाव ।
चन्द्र सूर्य जब एक हों,
सुखमन घाट नहाव ।४।
तिरबेनी स्नान भई ,
वहाँ खेचरी लागि ।
पाप पुण्य दोनों जरे,
सबै कामना भागि ।५।

हठ योगिन की खेचरी,
तुम्हें देंव बतलाय ।
जिह्वा उलटि के दशम में,
कसि के देव लगाय ॥६॥

महाशून्य के घाट पर,
महा खेचरी जान ।
भंवर गुफा पहुँच्यो जबै,
बंद भई तब मान ॥६॥

श्री गुरू शुकदेव जी,
मोपर किरपा कीन ।
रूप सदा सन्मुख रहै,
सूरति शब्द में लीन ।८।

मानुष का तन पाय के,
निशि दिन भज्यो न राम ।
अगणित चक्कर काटि हैं,
मिले नहीं विश्राम ॥६॥

राम नाम सुमिरन करौ,
तन मन प्रेम लगाय ।
नानक की यह विनय है,
सबसे शीश नवाय ॥१०॥

पदः— सब में सब से परे हैं.
स्वामी रूप अहै नहिं रूपम ॥१॥
अकथ अनादि कहैं सुर मुनि,
सब गावत चरित अनूपम ॥२॥

अकह अपार अगम करुणा मय,
भक्तन हित नर रुपम ॥२॥
नानक सरन सरन प्रभु तेरी,
चर अरु अचर के भूपम ॥४॥

चौपाई:— मानुष का तन मिल्यो अमोला,
करि हरि भजन सुफल करु चोला ॥१॥
हरि को भजि ले सुरति सम्हारी,
कह नानक फिर मिलै न बारी ॥२॥

संतन के यह बचन करारी,
नानक तन मन प्रभु पर वारी ॥३॥

दोहा:—

महा प्रकाश में रूप है ।
रूप में महा प्रकाश ।
नाम में महा प्रकाश है,
रूप में नाम का बास ॥१॥
नाम रूप परकाश का,

देखा चहे जो रंग ।
नानक हर दम हरि भजै,
रहै सदा ही संग ।२।
गौर वर्ण शशि जानिये,
श्याम वर्ण हैं भानु ।
पालन शशि ते होत है,
उत्पत्ति सूर्य से जानु ।३।
चौपाई:– पिता विष्णु सम रवि को जानो ।

लक्ष्मी माता सम शशि मानो।

सुखमन मन को सुख उप जावै।

धुनी ध्यान लय में पहुँचावै।२।

दोहाः– शशि ते थिर कारज बनैं,

रवि से चर को जान।

नानक हरि के भजन बिन,

मिलै न पद निर्वान।१।

सिध्दिन में परि के कहीं,

मन प्रसन्न ह्वै जाय ।

पावन बेड़ी परि गई,

घूमि घूमि चकराय ।२।

तीखे कंटक जानिये,

बचा रहे सो सूर ।

नानक गुरु परताप ते,

राम कृपा भर पूर ।३।

चौपाईः— चारौ ध्यान देवं बतलाई ।

सुनि कै तन मन अति हर्षाई ।१।

प्रथम ध्यान करु नैनन बंदा ।

देखौ चरित सच्चिदानन्दा ।२।

दूसर ध्यान खुले दोउ नैना ।

खेलैं हंसैं कहैं मृदु बैना ।३।

तीसर ध्यान है सन्मुख झांकी ।

बरनि सकै को छबि अति बांकी ।४।

चौथा ध्यान दिव्य साकेता ।

संत हंस संग कृपा निकेता ।५।

चारों ध्यान सिद्धि ह्वै जावै ।

तब सब सुर मुनि दरश दिखावैं ।६।

नाना खेल करैं संग आई ।

सो चरित्र नहिं बरनि सिराई ।७।

दोहा:- पाँच प्राण मिलि एक हों,

तब पावो वह ठौर ।

कह नानक मेरे गुरु,

तत्व ज्ञान शिर मौर ।१।
आपने में सब को लखैं,
सब में आप को मान ।
इस रहस्य के भेद को,
नानक सो कछु जान ।२।
नाद बिन्दु में जब कोई,
है जावै सम्पन्न ।
वीर्य उर्ध्व होवै तबै,

कह नानक सो धन्य ।३।

चौपाईः- पदवी महापुरुष की जानौ ।

दरशन करत हरैं अघ मानौ ।१।

दोहा :- नानक ऐसे संत जन,

गुरु किरपा मिलि जाहिं ।

मानो हरि ही मिल गये,

भेद नहीं बिलगाहिं ।१।

नानक ऐसे संत जन,

करैं सदा उर बास ।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते,
तन मन रहे हुलास ।२।
संतन की महिमा अगम,
मेटि करम गति देहिं ।
बचन प्रभू टारैं नहीं,
पास आपने लेहिं ।३।
संतन की संगति करै,

आवागमन नशाय ।
कह नानक मानो बचन,
दीन्हों भेद बताय ।४।
गई पिपीलिका गगन तक,
मीन समाधी कीन ।
सात स्वर्ग ऊपर बिहंग,
जाय के आसन लीन ।५।

सूरति लागै शब्द पर,
तन मन प्रेम से जान ।
नानक ताको प्राप्त हों,
चारों विधि के ध्यान ।६।